Shukla, Siddhagopala
Khuni gajalem

ाल ग्रन्थ-माला का पहला रत्न

Part I

ख़ूनी ग़ज़लें

१

प्रकासक

राष्ट्रीय सरस्वती सदन, कानपुर

खूनी गजलें

प्रथम भाग ।

संग्रहीता—

सिद्धगोपाल शुक्ल,

बिगहपुर-उन्नाव ।

प्रकाशक—

राष्ट्रीय सरस्वती सदन,

चावल मण्डी,-कानपुर ।

द्वितीय वार २०००

१९२२ ई०

मूल्य -)॥

पण्डित रामगोपाल दीक्षित द्वारा "रमा" प्रेस,

कानपुर में छपी ।

एक अनूठी पुस्तक

स्वयं चिकित्सक।

अब वैद्य और डाक्टरों के पास जाने की जरूरत नहीं रही। प्रत्येक गृहस्थ को 'स्वयं चिकित्स' मँगा कर अपने घर में रखना चाहिये। यह एक ऐसी पुस्तक है कि जो वक्त पड़ने पर हजारों रुपये का काम देती है। इसमें अनेक रोगों की अनुभूत औषधियां बतलाई गई हैं। अँग्रेजी दवाइयों के देशी नाम तथा उनके बनाने की विधि भली भांति वर्णित है। सरल से सरल नुस्खों द्वारा आप रुपयों की औषधि पैसों में तय्यार कर सकते हैं। अचानक किसी वक्त काम पड़ जाने पर यही एक पुस्तक है जो घरेलू डाक्टर का काम देती है। प्रत्येक गृहस्थ को अपने घर में मँगा कर अवश्य रखना चाहिए। मूल्य केवल १) रुपया डाक खर्च।-)।

मिलने का पता—

पं० यज्ञदेव शर्म्मा,

कुरसवां कानपुर।

खूनी ग़ज़लें

प्रथम भाग।

——*——

१—हुब्बे वतन।

हर यक दिल में ख़ुदाया जिस घड़ी दर्दे वतन होगा।
हमीं फिर बाग़बां होंगे हमारा ही चमन होगा॥
न यां लन्दन न अमरीका न होंगी चीन की चीज़ें।
यहीं की सारी चीज़ें हमको करना जेबतन होगा॥
यह कह दो रिश्तेदारों से कि लाशा तब उठावेंगे।
स्वदेशी जिस्म पर जब यह स्वदेशी ही कफ़न होगा॥
तो फिर हो जायगा इक साल में हमको स्वराज्य हासिल।
कि दावेदार आज़ादी का हर तारे कफ़न होगा॥
तिजारत की इना जब हाथ में होगी हमारे फिर।
तो हर एक कारख़ाना याँ का मशहूरे ज़मन होगा॥
कभी फिर हिन्द का नामे मुक़द्दस चर्ख़ पर होगा।
कभी ढाके की मलमल फिर से मशहूरे ज़मन होगा॥
कभी तो हिन्द वालों की जहां में क़द्र फिर होगी।
यहां का इक पड़ा ढेला कसी लाले यमन होगा॥
यह सब फहरत तभी होगी कि जब आंखों से देखेंगे।
कि बाहम इत्तफ़ाक़ो मेल और हुब्बे वतन होगा॥

——गंगाधरनाथ

दब नहीं सकता सितम से तीर से तलवार से।
जोश वो जो यक फिदाकारे वतन के दिल में है ॥ ५ ॥
वो फिदाये जुल्म हैं तो मैं फिदाये क़ौम हूँ।
मेरा सर हाज़िर है गर खञ्जर कफे क़ातिल में है ॥ ६ ॥
चक्र तूफाने जफा की कुछ नहीं परवा मुझे।
मैं समझता हूं कि अब किस्ती लबे साहिल में है ॥ ७ ॥

सुदर्शन नारायण पांडे।

५---दम खम तेरी तलवार का।

---:*:---

है दिले रोशन हमारा तार यक बेतार का।
जानते हैं हाल घर बैठे समन्दर पार का ॥ १ ॥
हाल जब मैंने कहा उनसे दिले बीमार का।
नाज़ से बोले यह क़िस्सा है सुना सौ बार का ॥ २ ॥
सर बक़फ फिरते हैं हम शौके-शहादत दिल में है।
देखना है एक दिन दम खम तेरी तलवार का ॥ ३ ॥
है मेरे नालों में डायर क्या क़यामत का असर।
हिल गया हैबत से सिंहासन तेरी सरकार का ॥ ४ ॥
दिल में दी जिसको जगह दुख दर्द में साथी रहे।
वाह बेदरदी वह मालिक बन गया घरबार का ॥ ५ ॥
अपने हलवे और मांड़े से है मतलब रात दिन।
उनको क्या मालूम है, क्या भाव है बाजार का ॥ ६ ॥

रहरवे--राहे--मुहब्बत देख अब हिम्मत न हार ।
तय हुआ जाता है रस्ता मंज़िले--दुशवार का ॥ ७ ॥
राज़ सरवस्ता मसीहाई का रहने दीजिये ।
हो चुका तुम से मदावा बस दिले--बीमार का ॥ ८ ॥
जल उठी सैय्याद दम भर में क़फ़स की तीलियां
और दिखलावें तमाशा आहे-आतिशबार का ॥ ९ ॥
चढ़ के सूली पर अनलहक़ कह दिया मंसूर ने ।
डर है दुनियां में दिले बेदार को क्या दार का ॥ १० ॥
है किसी के खंजरे-मौजे-तबस्सुम का शिकार ।
पूछतेहो हाल क्या "दिन कर" जिगर अफगार का ॥ ११ ॥

'दिनकर' शर्मा ।

६--बुलबुलों की आह ।

ज़रा तासीर ये बुलबुल दिखादे अपने नालों को ।
यहां मजलिस है बाघे हुर्रियत के नौनिहालों को ॥१॥
कमन्दे डाल दी हैं दौड़ कर बामे तरक्की पर ।
उलुल अज़्मी कोई आकर तो देखे खुर्द सालों की ॥२॥
निकल आए हैं मैदाने अमल में मुस्तएद होकर ।
बहुत दिन तक पकाईं खिचड़ियां हमने ख़यालों की ॥३॥
चले हैं जानिबे मकसूद नाम अल्लाह का लेकर ।
मदद खुद गैब से हो जायगी अल्लाह वालों की ॥४॥
चला है एक मुद्दत में पता अपने तग़ाफ़ुल का ।
पड़ी है 'मीर' अब जाकर खबर यूरुप की चालों की ॥५॥

फतह से ।

७--छोड़ दे।

बे--गुनाहों को ऐ ज़ालिम अब सताना छोड़ दे।
हो गया हूँ तङ्ग अब तो, जी जलाना छोड़ दे॥
फूल चुन कर बाग़ के, वीरां किया तूने इसे।
बाग़वां है आगया, अब फूल चुनना छोड़ दे॥
खैर चाहे अपनी यदि तू ठीक हो जा शीघ्रही।
है यह मेरी वाटिका, अपनी बताना छोड़ दे॥
छीनते हैं वस्तु तेरी, हम नहीं तुझसे कभी।
ले रहे हैं चीज अपनी, भौं चढ़ाना छोड़ दे॥
हो मुबारक तुझको तेरा, अपना लेकर तू रहे।
आनन्द करने दे हमें, अब ज़ुल्म करना छोड़ दे॥
अन्त में मेरा है कहना, बन न "पागल" मोह में।
छोड़ दे लालच चला जा, पल गवाँना छोड़ दे।

"पागल"

८--नसीहत।

गरदन हो आगे झुकी हुई, दस्ते क़ातिल तलवार रहे।
हो गोली अथवा किरच मगर सीने पर पहिला वार रहे॥
हर एक मुसीबत सहने को, हरदम खुश दिल तैयार रहे॥
फिर देख देख हमको, वह खूनी कातिल भी बेजार रहे।
हो डोम कसाई ब्रह्मण, पर सबका सब पर एतबार रहे।
हम हिन्दू हों या मुसल्मान, जांबख़्शी को तैयार रहे॥

हिन्दुस्थानी हर पुतलों के, दिल में क़ौमी आज़ार रहे।
चरखा चलता हो घर घर में, बच्चों के हाथों तार रहे॥
जेलों में जाने का हरदम, हर जां को ख़ब्त सवार रहे॥
हर शख़्स जहां में इज़्ज़त पर मर मिटने को तैयार रहे।
हर मुँह पर लफ़्ज़ स्वराज्य रहे, अरु असहयोग औजार रहे॥
यह सब हो लेकिन अपने, दुश्मन पर सबका प्यार रहे॥

'रतन'

६–जिसका जी चाहे।

असहयोगी बना मैं. आज़मा ले जिसका जी चाहे।
निशाना अपने ज़ुल्मों का, बनाले जिसका जी चाहे॥
सिखाया मंत्र सत्याग्रह, मुझे प्रहलाद गांधी ने।
देश के वास्ते शूली, चढ़ा ले, जिसका जी चाहे॥
लिए फिरते हैं खुद ही जो, सर अपना अथेली पर।
उन्हें क्या खौफ़ हथकड़ियां पिन्हा ले जिसका जी चाहे॥
मैं अपने सत्य-व्रत पालन से टलने का नहीं हर्गिज़।
बदन पर बेंत या कोड़े लगा ले जिसका जी चाहे॥
मुझे भी देखना यह है, कहां तक ज़ुल्म की हद है।
बदन की धज्जियां मेरे, उड़ा ले जिसका जी चाहे॥
हूं शैदाये वतन मैं. मुंह से हरगिज उफ न निकलेगा।
लहू खन्जर के वारों से बहा ले जिसका जी चाहे॥
जब एक एक की जगह सौ सौ हैं तत्पर जेल जाने को।
हमें अन्याय से क़ैदी, बना ले जिसका जी चाहे॥

'बहादुर' हिन्द कैसा है, किसी दिन ये प्रगट होगा।
अभी तो कायरो बुज़दिल बना ले जिसका जी चाहे॥

"बहादुर"

१०-सैय्याद को दुआ।

बे-ख़बर ग़ाफ़िल नहीं रहने के अब सैय्याद हम।
आ नहीं सकते हैं तेरी, घात में सैयाद हम॥
कुछ भी तू बातें बना पर, जान लीं चालाकियां॥
होगए होशियार हैं इन, हरकतों के बाद हम।
दे भुलावा तू ने हमको, था फँसाया जाल में॥
छूटे हैं मुश्किल से पंजे से, तेरे आज़ाद हम।
गोलियां बरसा चमन, को खून से तर कर दिया॥
इस रंग में ही मस्त हैं, करते नहीं फ़रियाद हम।
कर न अब ज़ुल्मों सितम इन हरकतों से बाज़ आ॥
देते हैं तुझको दुआ दिल थाम कर सैयाद हम।

'वि० प्यारेलाल दुबे'

११-बदनाम कर दिया है।

सर मुल्क पर तसद्दुक मज़हब पै दिल फ़िदा है।
अल्लाह रास्त [illegible] ये अह्द कर लिया है॥
हमसे न कोई [illegible] दिल में हमारे क्या है।
कुछ हसरतें जमा हैं, कुछ दर्द कुछ भरा है॥
भारत की बिजलियाँ हैं, जो लुत्फ़ मिल रहा है।
कुछ हम ही जानते हैं, कुछ दिल ही जानता है॥

क़ौलो-क़सम के अपने, पाबन्द हैं हम ऐसे।
जो कुछ कहा ज़ुबां से, कर के दिखा दिया है॥
अपने वतन पर मरना, एक खेल है हमारा।
जब चाहो आज़मा लो, फिर सच को आंच क्या है॥
जां बाज़ियां हमारी बे-मेहरियां तुम्हारी।
दुनियां भी जानती है, अल्लाह जानता है॥
हिन्दोस्तां की क़ौमें, बेदार हो गई हैं।
अब गफ़लतों का पर्दा, आंखों से उठ गया है॥
हम यह भी जानते हैं, जो कुछ है होने वाला।
हम यह भी देखते हैं, जो कुछ कि हो रहा है॥
खुद गर्ज़ियां तुम्हारी, हर क़ौम जानती है।
वादा ख़िलाफ़ियों ने, बदनाम कर दिया है॥
आज़ादिये वतन और आज़ादिये ख़िलाफ़त।
वह अपनी आरज़ू है, ये अपना मुद्दआ है॥
तरज़े अमल तुम्हारा, हमको नहीं गवारा।
हम तुम से कब खिचे हैं, तुमको ख्याल क्या है॥
इस ज़िन्दगी का 'नस्तर' कुछ भी नहीं भरोसा।
जब तक भी आ रहा है, ये सांस आ रहा है॥

———:*:———

१२--तेग़ पै सर देखेंगे।

———:*:———

किस पै हो जाती है मालिक की मेहर देखेंगे।
किसका पड़ता है ज़माने पै असर देखेंगे॥

दोनों मशगूल हैं हल करने में मतलब अपना।
बाकी रहजाती है अब किसमें कसर देखेंगे ॥
इन्हें आजादी का दावा है उन्हें जोर का दम।
कौन रह जाता है अब जेरो जबर देखेंगे ॥
उधर गुरूर हुकूमत है इधर दर्दे वतन।
कौन हट जाता है अब छोड़ के दर देखेंगे ॥
खौफे सरकार से दबते हैं असहयोगी या—
खुद दबी रहती है सरकार की डर देखेंगे ॥
फैसला होता है आजादी औ गुलामी का ॥
कौन करता है फिदा तेग पै सर देखेंगे।

"श्रीकान्त कुसुमाकर"

१२-बैठे हैं।

अलविदा तुझसे लिए चर्खे कुहन बैठे हैं ॥
जेल जाने को यह शैदाय वतन बैठे हैं।
गोलियां हम पै चलें या कि क़त्ल हो जायें ॥
सर से बांधे हुए हर वक्त कफन बैठे हैं ॥
गीत गाते थे जो आजादी का बुलबुल हो कर।
क़ैदे सैयाद में वह रश्के-चमन बैठे हैं ॥
हथकड़ी बेड़ी तो अब जिस्म का जेवर ठहरा।
जीनसे क़ौम हैं जो आज पहन बैठे हैं ॥
कोशिशें लाख की पर कुछ न नतीजा निकला।
अब "असहयोग" के दर पै ही "सरन" बैठे हैं ॥

१४--खूं से रंग जाने के बाद।

रूह खुश होगी मेरी खुद खाक हो जाने के बाद।
जग उठे अहले वतन गर अपने मर जाने के बाद॥
मुश्शहद से आ रही है यह शहीदों की सदा।
हम वह इन्सां हैं जो रङ्ग लाये हैं मर जाने के बाद॥
कल लबे दरिया पै जाके मैं जो नालाकश हुआ।
मछलियां आईं निकल पानी उबल जाने के बाद॥
आहे सोज़ां के असर से तुम भी बच सकते नहीं।
हमतो मर जायेंगे हज़रत गोलियां खाने के बाद॥
खूंन नाहक से भरी तारीख जब लिख जायगी।
बच्चा बच्चा जग उठेगा अपने मर जाने के बाद॥
आज मक़तल में तुम्हारे ज़ुल्म की कुल दासतान।
फ़नदा हो जाएगी मेरी लाश उठ जाने के बाद॥
एक दिन होगा कि सब इस रङ्ग में रँग जायंगे।
रंग चढ़ेगा गैर पर खुद खूं से रंग जाने के बाद॥
बे रुख़ी कब तक करोगे ज़ुल्म होंगे कब तलक।
मेहरबां हो जाओगे आखिर को झुंझलाने के बाद॥

गंगाधर निगम।

१५--इन्तजार बाकी है।

दौलते हिन्द अभी बे-शुमार बाकी है।
हम गरीबों का अगर दसवार बकी॥

उतर चुका है गुलामी का नशा ऐ साक़ी।
मगर हाँ चश्मों में कुछ २ खुमार बाक़ी है॥
खूनी डायर को नहीं जब तलक सज़ा मिलती।
हिन्द वालों के दिलों में गुबार बाक़ी है॥
मालो जर इज़्ज़तो हुर्मत सभी गँवा बैठे।
अब तो जाने की फ़क़त जाने ज़ार बाक़ी है॥
चाल बाज़ीसे तेरी होगई दुनियां वाक़िफ़।
अब तो देने को फ़क़त इश्तहार बाक़ी है॥
निशाने ज़ुल्म मिटाने को है "सरयू" तैयार।
ख़ुदा के हुक्म का बस इन्तज़ार बाक़ी है॥

सरयूनारायण शुक्ल।

१६—सहयोगियों के प्रति।

ऐ मुहिब्बाने-वतन ! हमको सताना छोड़दो।
भाइयों के हलक़ पर ख़ञ्जर चलाना छोड़दो॥
चार दिन की ज़िन्दगी चार दिन की नौकरी।
चार दिन के वास्ते शाही रखाना छोड़ दो॥
शरकशी अच्छी नहीं है मौत है सर पर खड़ी।
सर कटा दो राहे हक़ में शिर उठाना छोड़ दो॥
चोरी किसी की है नहीं करते हो आंखें चार क्यों।
क्या किसी के चोर हो आँखें चुराना छोड़ दो॥
जिसने है पैदा किया खाने को भी देगा वही।
परवरिश की बाल बच्चों का बहना छोड़ दो॥

पेट में जब थे बताओ किसने खाने को दिया ।
आज़मूदा बात को तुम आज़माना छोड़ दो ॥
राज़िक़े मुतलिक़ खुदा है उस पै रक्खो एतक़ाद ।
सब को घर बैठे ही देगा गर बहाना छोड़ दो ॥
तुम मुसलमाँ हो कि हिन्दू हो तो आखिर हम वतन ।
हम वतन वालों का अपने दिल दुखाना छोड़ दो ॥
जो तुम्हारा खून है वो ही हमारा खून है ।
खूं बहा देना पड़ेगा खूं बहाना छोड़ दो ॥
एक दिन मर करके जाना है खुदा के सामने ।
क्या यह मुमकिन है खुदाको मुँह दिखाना छोड़ दो ॥
खुफिया वालो क्या तुम्हें खौफे खुदा आता नहीं ।
झूठी सच्ची खबरें जाकर तुम सुनाना छोड़ दो ॥
अब गुलामी हो चुकी है दोस्तो शरअन हराम ।
माल जो खाना नहीं है उसको खाना छोड़ दो ॥
हाय क्या क़ौमी हमीयत दिल से ही जाती रही ।
रहबराने क़ौम का वारण्ट लाना छोड़ दो ॥
और कोई वक्त आएगा फिर पछताओगे तुम ।
इससे पहिले दुश्मनों का दोस्ताना छोड़ दो ॥
गर मुसलमाँ हो करो हुक्म शरीयत पर अमल ।
दुश्मने दीन से मिलना मिलाना छोड़ दो ॥
जाके यह सी० आई० डी० वालों को समझाये कोई ।
तुम खुदा के वास्ते जल्से में आना छोड़ दो ॥

———:*:———

१७-हमारा उद्देश्य ।

करेंगे देश की सेवा यही दिल में समाई है ।
भलाई देश की ही में हमारी भी भलाई है ॥
यतन से देश को उन्नत करेंगे भाई सब मिल कर ।
फतह होगी हमें इसमें वही देता दिखाई है ॥
मुसलमा, आर्य, जैनी, पारसी, बुध, सिक्ख, ईसाई ।
हुआ जो हिन्द में पैदा, हमारा देश भाई है ॥
वतन है हिन्द हम सबका, भला इसका ही चाहेंगे ।
सभी ने मुल्की खिदमतके लिए यह देह पाई है ॥
मुहब्बत यह न टूटेगी, न हम में फूट फूटेगी ।
दिखा देंगे यह दुनियाँ को न हम मेंअब जुदाई है ॥
हमारा ध्येय निर्मल है हमारा लक्ष्य है निश्चल ।
स्वदेशी देश-हित व्रत की लगन हमने लगाई है ॥
करेंगे प्राप्त अपने स्वत्व विघ्नों से न विचलेंगे ।
युगों के बाद फिर स्वाधीनता मिलने को आई है ॥
गहेंगे अस्त्र सत्याग्रह निरंकुशता नशाने को ।
सचाई है जहाँ, ईश्वर वहीं होता सहाई है ॥

पढ़ने योग्य पुस्तकें

[गो]पाल ग्रन्थ-माला का तीसरा रत्न

Part II

ख़ूनी ग़ज़लें

२

प्रकाशक

राष्ट्रीय सरस्वती सदन, कानपुर

गोपाल ग्रंथ—माला का तीसरा रत्न

खूनी गज़लें।

Khūnī gajalem

द्वितीय भाग

v. 2

संग्रहीता—

Shukla, Siddhagopala

सिद्धगोपाल शुक्ल,

बिगहपुर—उन्नाव।

प्रकाशक

राष्ट्रीय सरस्वती सदन,

चावल मंडी, कानपुर।

प्रथम बार 2000 } १९२३ ई० { मूल्य -)॥

आरोग्यता के लिये फायदेमन्द—

दिल को खुश करने वाली चीजें इस्तेमाल करो

पान शृङ्गार गोली–आप पानमें ज़रूर खाइये इसमें तम्बाकू नहीं है

पान शृङ्गार गोली–से पान की लज्ज़त बढ़ जाती है।

पान शृङ्गार गोली–पान में खाने से मुंह खुशबू से भर जाता है

पान शृङ्गार गोली–हमेशा पानमें खाने से खाँसी कभी नहीं आती

पान शृङ्गार गोली–पाचन करती, और भूख को बढ़ाती है

पान शृङ्गार गोली–बदन की बादी को हटाकर ताकत बढ़ाती है

पान शृङ्गार गोली–मुंह के जायके को सुधारती है।

पान शृङ्गार गोली–से जी का मचलना दूर होता है।

पान शृङ्गार गोली–से डकार के साथ मुंहसे खुशबू उड़ती है।

पान शृङ्गार गोली–पानकी पीक को गाढ़ी करती है।

पान शृङ्गार गोली--की खुशबू मुंह में बहुत देर तक रहती है

पान शृङ्गार गोली--कोकीन व तम्बाकू को छुड़ाती है।

पान शृङ्गार गोली--खुश्की को दूर करके तरावट लाती है।

पान शृङ्गार गोली--में अवगुण करने वाली कोई चीज़ नहीं है।

मूल्य फी शीशी (७५० गोली) १) डाक व्यय अलग

पान शृङ्गार मसाला।

खुशबू व लज्ज़त में पान शृङ्गार गोलियों के ही माफिक है मूल्य फी शीशी (२ औंस मसाला) १।=) एक रुपया छः आना, बड़ी शीशी (४ औंस मसाला) २॥) दो रुपया आठ आना महसूल डाक अलग।

नोट--व्यापारियों के थोक आर्डर पर =) ≈) ।) ॥) वाली शीशियां भर कर आर्डर आने पर कारखाने से भेजी जाती हैं। ज़्यादा आर्डर पर काफी कमीशन भी दिया जाता है।

पताः-- कारखाना "पान शृङ्गार मसाला" कुरसवां, कानपुर

वंदे मातरम्।

खूनी ग़ज़लें।

द्वितीय भाग।

स्वदेशी— १

भारत के दिन फिरंगे, प्रचार हो स्वदेशी।
व्यापार हो स्वदेशी, बाज़ार हो स्वदेशी॥
है अपनी चीज़ अपनी, चाहे बुरी भली हो।
दिल से पसन्द हम को, हर बार हो स्वदेशी।
दिल पर स्वदेश भक्ती, का रंग होगा गाढ़ा।
जब ज़ेब तन हो खद्दर दस्तार हो स्वदेशी॥
नक्काल मत रहो अब, मित्रो बज़ा बदल दो।
रफ्तार हो स्वदेशी, गुफ्तार हो स्वदेशी॥
फिर भी बना दिखादो ढाके की वैसी मलमल।
फिर खार हो स्वदेशी, गुल्ज़ार हो स्वदेशी॥
यह है निशां फतह का, हासिल स्वराज्य होगा।
ऐ दोस्तो गले का, जब हार हो स्वदेशी॥

देवी चरण मुनीम।

कैसा है २

हमें कैदी बनाने के लिए तैयार कैसा है।
ज़रा देखो हुआ सैय्याद भी अय्यार कैसा है॥
गिरा कर लोभ के दाने बिछाया जाल है हरसू।
फँसे हम आप फँदे में कहो हुशियार कैसा है॥
पढ़ाता है हमेशा यह हमें बेसूद की पट्टी।
भरा है बुग्ज़ सीने में अजी बदकार कैसा है॥
हम अब चाल में इसकी नहीं आना मुनासिब है।
कसाई का कहो दुनियां में रहमो प्यार कैसा है॥

श्री० लाल

ग़ज़ल २

कर सकें तारीफ़ क्या ज़ालिम तेरे बेदाद की।
कौन सुनता है सदा अब आशिके नाशाद की॥
कर चुके मक़तल में आंखें ही दिखा कर कत्ल वो।
दे गई है काम ख़न्जर का नज़र जल्लाद की॥
छोड़ दो ऐ हिन्द वालो ग़ैर कपड़े छोड़दो।
सनअतो हरफ़त उन्हों ने हिन्द की बरबाद की॥
खाते हैं बेइज़्ज़ती से ठोकरें हरजा गुलाम।
आबरू है चश्म आलम में फ़क़त आज़ाद की॥
कुरबतै किस्मत से हमने कर लिया जिस पर यकीन।
अपनी तो मिट्टी उसी कमबख़्त ने बरबाद की॥

किस गज़ब का है मेरे शौके सहादत का असर ।
उड़ गया मुँह फीकी रूहत पड़ गई जल्लाद की ॥

भागीरथ लाल ।

ग़ज़ल ४

लुत्फ लाएगी कभी तासीर यह फरियाद की ।
भूल शोख़ी जायगी सारी कभी सैयाद की ॥
बेगुनाहों का जहां मैं कत्ल करना क्या सहल ।
हाथ से शमसीर खुद गिर जायगी जल्लाद की ॥
सल्तनत यों जुल्म की भी देर पा होती नहीं ।
देर तक टिकती नही ज्यों नीव बेबुनियाद की ॥
अब भला हम आपके क्या काम आएँगे जनाब ।
आपने मिट्टी हमारी खूब ही बरबाद की ॥
देश के जयचंद हमको दे सकेंगे क्या मदद ।
हाँ खुदा ही तबका 'लाल' है इमदाद की ॥

श्री० लाल ।

ग़ज़ल ५

हुक्म दे ऐ सोजिये त जो मुझे नाशाद को ।
फूँकदूँ दम भर में मैं चर्ख़ सितम ईजाद को ॥
तुझ से बढ़ कर चाहता हूँ मैं तेरी बेदाद को ।
चम लेता हूँ लिपट कर खंजरे फौलाद को ॥

मुर्ग़ बुलबुल की ख़बर जिस दम हुई सैयाद को।
खिल पड़ा गुल की तरह सुन कर मुबारक बाद को॥
ना रसाई ने गला घोटा लबे फरियाद का।
दे असर आजा ख़ुदा के वास्ते इमदाद को॥
'आसी' यह बेज़ार की आहें न खाली जायँगी।
बर्क़ बनकर फूँक देंगी खानए सैयाद की॥
नरवदा प्रशाद बर्म्मा 'आसी'।

ग़ज़ल ६

देखना है हिम्मते मरदाना किसके दिल में है।
दे वतन पर जां दिलावार कौम इस महफिल में है॥
जान जाने का नहीं ख़ौफो ख़तर कुछ दिल में है।
दम अटक अपना रहा अब ख़ंजरे कातिल में है॥
इस कदर सरमाया दारों से परीशां लोग हैं।
आज है हड़ताल इस मिल में तो कल उस मिल में है॥
लुट गया सारा ख़ज़ाना बेबसी की राह में।
क़ाफ़िला अब कौम का इफ़लास की मंज़िल में है॥
मर्दोज़न पीरो जवां क्या तिफ्ल भी जाते हैं जेल।
उस सितमगर के सितम से सब की जाँ मुशकिल में है॥
आके आख़िर तंग उसकी पालसी से चाल से।
नर्म भी कहते हैं अबतो क्या धरा कौंसिल में है॥
सर हथेली पर लिए बैठे हैं शैदाये वतन।
शोर महशर से सिवा अब कूचये क़ातिल में ह॥

टूट जाएँगी कफ़स की तीलियाँ सैय्याद यह ।
जिंदगी है दम अगर बाकी तने विस्मिल में है ॥
सर करेंगे दम में मैंदां क़ौम के लख़्ते जिगर ।
क़ौम का सौदा है सर में क़ौम की धुन दिल में है ॥
है यकी एक दिन हमें गान्धी दिलायेगा स्वराज्य ।
क्या हुआ गर आज कल वह जेल की मंज़िल में है ॥
आरही है जेल के दीवारो दर से यह सदा ।
क़ौम के मजनू तेरी लैला इसी महफ़िल में है ॥
चलता है बेड़ा तेरा 'अख़्तर' अजब रफ़्तार से ।
आही पहुँचा अब नहीं बाक़ी कसर साहिल में है ॥

गजल ७

दिल जलों का ऐ सितमगर दिल जलाना छोड़दे ।
मिट रहे जो आपही उनको मिटाना छोड़दे ॥
दिन हमेशा हैं नहीं रहते किसी के एक से ।
आहो जारी सुन के मेरी अब सताना छोड़दे ॥
चाक करदे दिल भले ही तेरी धमकी से मगर ।
कौन बुजदिल है जो छुब्बे आशियाना छोड़दे ॥
बेवफाई करके हम से मुफ़्त में क्या पा लिया ।
डर खुदा से बेगुनाहों का खूं बहाना छोड़दे ॥
सब समझते हैं तेरी चालें ऐ बद अहद हम ।
दम दिलासा देके यूं बातें बनाना छोड़दे ॥

प्रभाकर

हम आज़ाद हैं । ८

फ़ख़र गो इस बात पर है, हिन्द की औलाद हैं, ।
पर गुलामी में फँसे हैं इस लिए बरबाद हैं ।
कब्र से देते सदा मकतूल जलियाँ बाग़ के,
हमवतन जो ज़ुल्म हम पर हैं हुए कुछ याद है ।
वे कसूरों को सताते जो हुकूमत के लिए,
दादगर उनको कहें या यह कहें जल्लाद हैं ।
पर कतर कर छोड़ रक्खा है हमें सैय्याद ने
फिर तुम्हीं कह दो भला क्यों कर कहें हम शाद हैं ।
आएँगे मुतलक न बातों में कभी बन्दा नवाज़,
तिफ़्ल मकतल अब नहीं कुछ हम हुए उस्ताद हैं ।
हिन्दू मुसल्मां में बहम क़ायम रहा यह इत्तहाद,
एक दिन तो देख लेना 'लाल' हम आज़ाद हैं ।

श्री० 'लाल' ।

ग़ज़ल ९

हो गया बेदम नहीं दम खंजरे कातिल में है ।
सख़्त जानी से मेरी अब उसकी जां मुश्किल में है ॥
मेरा पैमाना रहा ख़ाली है पुर ग़ैरों के जाम ।
बू दुरंगी की बसी साक़ी तेरी महफिल में है ॥
एक मुद्दत से असीरी में है अब सैयाद हम ।
और आजादी की ख़्वाहिश कैद अपने दिल में है ॥

ज़ख़्म पर हैं ज़ख़्म खाए दाग पर खाए हैं दाग ।
अबतो एक गुलशन का नक्सा सीनए बिसमिल में है ॥
वाये-किस्मत हमसे बेचारों का कुछ चारा नहीं ।
रोज कहते ही रहे वह पेश बिल कौंसिल में है ॥
जाँ की उल्फत छोड़ कर शौके शहादत में चला ।
अब वतन का क़ाफिला उम्मीद की मंजिल में है ॥
जिब्बह कर ज़ालिम न तड़पा यों ख़ुदा के वास्ते ।
आरज़ू अब सर के देने की दिले साइल में है ॥
मैं तो हूं तारा बना चरख़े सख़ुन का दोस्तो ।
दिल में क्या "अख़्तर" मुनव्वर आंख के हर तिल में है ॥

गजल १०

बला से तू मुझे मायूस आहे-नारसा करदे ।
नहीं मुमकिन दिले बेताब तर्के मुद्दआ करदे ॥
हमें सूली पै लटका दे हमें बे दस्तो पा कर दे ।
रवाना बेड़ियां पहिना के सूए जेल को कर दे ॥
मुहब्बत मादरे भारत की दिल से मिट नहीं सकती ।
सजाए-अन्डमन भी बानिए-जौरो जफा कर दे ॥
मसीहाई की हाजत है न कुछ फिक्रे सफा हरगिज़ ।
दिया है दर्द गर तू ने तो इसको ला दवा कर दे ॥
न रंजो ग़म से बेकल हो सितम सहकर दुआ गो हो ।
दिलेदर्द आशना यारब मुझे ऐसा अता कर दे ॥

न जुरमाने से डरते हैं, न कुछ ग़म कैद का हमको ।
कहेंगे हम खुदा लगती वो जो चाहे सज़ा करदे ॥
रज़ाकाराने कौमी बन गए हैं गैरक़ानूनी ।
तू बे ख़ौफो ख़तर साक़ी देर श्रय खाना वा कर दे ॥
तड़ातड़ बेड़ियां हों मादर भारत की दम भर में ।
हमीयत का हर एक हिंदी अगर कुछ हक अदा कर दे ॥
किया भेड़ों ने मलियामेट चरकर खेत भारत का ।
बयाँ यह हजरते ईसा से कोई माजरा कर दे ॥
हमें परवाह क्या गोरों की हम काले ही अच्छे है ।
हमें आज़ाद अपने देश में परमात्मा कर दे ॥
फ़क़त इस वास्ते "दिनकर" का वह मुंह बंद करते हैं ।
कहीं ऐसा न हो नाला से वह महशर बपा करदे ॥

ब्रह्मस्वरूप शर्म्मा "दिनकर"

गजल ११

नहो इन्सानियत का पास गर मौजूद इन्सा में ।
नहीं है फ़र्क फिर बाकी कोई इंसा में हैवाँ में ॥
रहें भारत में मिलजुल कर कि जैसे एक मा जाए ।
इलाही ऐसी उलफत हो बहम हिंदू मुसलमां में ॥
हमारा नख्ले दिल मुरझा गया वारे मुखालिफ से ।
क़फ़स में अब सैयाद राखे या गुलिस्ताँ में ॥
ग़ज़ब है अय मुसलमानों तुम अपनी आंख से देखो ।
मुक़ामाते मुक़द्दस और दस्ते-नामुसलमां में ॥

निगेहबाँ बन के लूटा दिन दहाड़े खानए बेकस।
सितम ढाए सितमगर ने न क्या २ बाग़े जलियाँ में ॥
जमीं गर्दिश में है हर वक्त दिल की बेकरारी से।
असर देखा फ़लक तूने हमारी आहे सोजां में ॥
शुजाअत क्या इसी को तू समझ बैठा है ऐ बुज़दिल।
चलाई बेकसों पर गोलियां जो बाग़े-जलियां में ॥
जरूरत तुझको है मजनूं तू जा सहरानवरदी कर।
मेरे घर में वियाबाँ है, मैं क्यों जाऊँ बयाबाँ में ॥
यक़ीं हो किस तरह हमको तुम्हारी झूठी बातों का।
कभी सच्चे भी निकले हो तुम अपने अहदे पैमां में ॥
मुचलके नेकचलनी के लिए जाते हैं क्यों हम से।
हमें वह बेखता क्यों डालते हैं क़ैदे ज़िंदां में ॥
पशेमानी से पानी पानी हो जायेंगे अए "दिनकर"।
ज़रा मुंह डाल कर देखें तो वे अपने गरीबाँ में ॥

ब्रह्मस्वरूप "दिनकर"

बुलबुल की फरियाद १२

क्या से क्या अब हाय अपना आशियाना हो गया।
नाव के बरके मुसीबत का निशाना हो गया ॥
हाय क़य्यामे अज़ल ने रोजी जब तकसीम की।
अपनी किसमत में क़फ़स का आबदाना हो गया ॥
अब कहां है वह चमन वह गुल कहाँ वह दिल कहां।
हो चुकी वह नग़मा सञ्जी वह तराना हो गया ॥
पर कटे हैं ताक़त परो अज बाजू में नहीं।
लुत्फ़ के वह दिन गये अब वह जमाना हो गया ॥

छोड़दे सैय्याद जालिम अब मैं तनहा क्या करूँ ।
काफि.ला सबरो तहम्मुल का रवाना होगया ॥
लुत्फ आजादी की अबतो याद तक दिल में नहीं ।
मुद्दतें गुजरी कफस में एक जमाना हो गया ॥

लीडर १३

गो लाख होशियार हूं और जी-शऊर हूं ।
देशो धरम के काम से रहता मैं दूर हूं ॥
मंदिर सभा समाज में जाता नहीं कभी ।
हुक्काम के सलाम को जाता जरूर हूं ॥
खुश किसमती से राय बहादुर भी बन गया ।
और म्यूनिसिपिलटी में भी जी हुजूर हूं ॥
लोगों की हाकिमों से मैं करता हूं शिकायत ।
खुफिया पुलिस का गोया मैं ज़ाहिर ज़हूर हूं ॥
पबलिक भी कुछ न कुछ है मेरा रोआब मानती ।
लीडर नहीं तो लीडरों की दुम जरूर हूं ॥
साहब ने खफा होके कहा मुझ से डेम-फूल ।
मैं गिड़ गिड़ा के बोला हाँ हाँ हुजर हूं ॥

गजल १४

मादरे हिंद त अब ऐसे बशर पैदा कर ।
कृष्ण अर्जुन की तरह लख्ते जिगर पैदा कर ॥

जो राहे रास्त से पीछे न क़दम को रक्खें ।
तू हरिश्चन्द्र से फिर नूर नज़र पैदा कर ॥
तुझ को आज़ाद बनाने में जो तैयार रहें ।
गांधी और तिलक से तू पिसर पैदा कर ॥
धर्म्म को जो न कभी हाथ से छोड़े अपने ।
राना प्रताप से फिर शेरे बबर पैदा कर ॥
जो तेरी लाज का हरवक्त रखें दिल में खयाल ।
लाजपतराय से तू लाखों बशर पैदा कर ॥
तेरी आज़ादी का पादा था लगाया जिसने ।
दादाभाई से तू दो चार पिसर पैदा कर ॥
जो विदेशों में भी जा तेरी तरक्की चाहें ।
गोखले जैसे तू अब और बशर पैदा कर ॥
जाके मैदान में जो शत्रू को दिखाएँ नींचा ।
शिवाजी ऐसे तू अब और बशर पैदा कर ॥
तेरी इमदाद में जो जान निछावर कर दें ।
तू दयानन्द से अब सीना सिपर पैदा कर ॥
प्रार्थना "चंद्र" की तुझ से है भारत माता ।
हो लगन जिनको तेरी ऐसे बशर पैदा कर ॥

गजल १५

यारब वतन का तुझको जिसदम खयाल होगा ।
फिर दुश्मनों से अपना बांका न बार होगा ॥

देशी की क़सम खा लें सब रोज़गार वाले ।
फिर देखना हमारा घर मालामाल होगा ॥
भर भर जहाज़ ग़ल्ला जाए न गैर जाको ।
फिर देश में हमारे किस तौर काल होगा ॥
हिम्मत से हिंद वालो तुम अब स्वराज्य ले लो ।
जन्नत का फिर यहीं पर तुम को वसाल होगा ॥
घी दूध खूब होगा गौओं की परवरिश से ।
फिर किस तरह किसी का चेहरा निढाल होगा ॥
यह जान लोगे जिसदम है हिंद मुल्क अपना ।
देदो स्वराज्य हमको यह क्यों सवाल होगा ॥
चढ़ जायेंगे खुशी से हम दार पर रक़ीबों ।
खाना नमक हमें भी उस दिल हलाल होगा ॥
पीटेंगे पेट अपना इङ्गलैंड के जुलाहे ।
कपड़ा बनाने में जब हासिल कमाल होगा ॥
कहते हैं चुप जबाँ रख कर लेगा नोट कोई ।
अए "इन्द्र" हमदमों का ऐसा न हाल होगा ॥

गजल १६

डराते हो मुझे नादान अब क्यों जेल के डर से ।
नहीं कुछ डर रहा मुझ को रक़ीबो तेग़ो खञ्जर से ॥
कमर बस्ता हुआ हूं मैं वतनके वास्ते जबसे ।
समझ रक्खा है ज़ियादह चैन मैंने जेलमें घर से ॥

गिरफ्तारी का ले वारन्ट मेरे पास आओ तो।
ख़ुशी होगी निहायत पेश आऊँगा मैं ख़ातिर से॥
अभी लेकर छुरी दिल चाक करके देख लो मेरा।
रँगा हूँ क़ौम के रंग में मैं अन्दर और बाहर से॥
राम का भक्त हूँ हुब्बे वतन क्यों कर न मुझ को हो।
मिला है हुक्म मुझको इस तरह का अपने फादर से॥
ताल्लुक़ छोड़ दो गोरों से अए हिन्दोस्तां वालो।
यही कहता फिरूँगा मैं वतन के हर बिरादर से॥
न करना ख़रच हम पर बीरता अए बीरपाल अपनी।
नसीहत यह ही होगी हिन्द के हर एक दिलावर से॥
हमारे इम्तहाँ के वास्ते इङ्गलैंड से भेजो।
जो ज्यादह जुल्म कर सकता हो डायर और ओडायर से।
"इन्द्र" उठ कर खड़े होंगे नसीहत सुनके मुरदा दिल।
मरों में ज़िंदगी आजायगी दुश्मन के फायर से॥

१७ क़ौव्वाली

लोग कहते हैं बदलता है ज़माना अक्सर।
मरद वह है जो ज़माने को बदल देते हैं॥
मरद क़ौमों को सबक़ योंही सिखा देते हैं।
दिल में जो ठानते हैं कर के दिखा देते हैं
आके मैदान तरक्की में पलटने के नहीं।
यह क़दम वह हैं जो बढ़ जायँ तो हटने के नहीं॥

देख लें धर्म का इस क़ौम में खूं बाकी है ।
इन रगों में अभी ऋषियों का लहू बाकी है ॥
अब ज़रा जज़्बए इख़लाक़ को आला करदो ।
क़ौम मरहूम की तुरबत पै उजाला करदो ॥

१८ क़ौव्वाली

उन्हें यह फ़िक्र है हरदम नई तरज़ ज़फ़ा क्या है ।
हमें यह शौक़ है देखें सितम की इंतहा क्या है ॥
गुनहगारों में शामिल हैं गुनाहों से नहीं वाक़िफ़ ।
सज़ा को जानते हैं हम ख़ुदा जाने ख़ता क्या है ॥
यह रंगे बेकसी रंगे जिनूं बन जायगा ग़ाफ़िल ।
समझ ले यासेबहरमा के मरज़ की इंतहा क्या है ॥
बना बिस्मिल हूँ मैं वाक़िफ़ नहीं रस्मो शहादत से ।
बतादे तू ही अए ज़ालिम तड़पने की अदा क्या है ॥
चमकता है शहीदों का लहू क़ुदरत के परदे में ।
शफ़क़ का हुस्न क्या है फूल की रंगे क़बा क्या है ॥
उमीदें मिल गई मिट्टी में दरदे ज़ब्त आख़िर है ।
सदाए गैब बतलादे मुझे हुक्मे ख़ुदा क्या है ॥

रायलप्रिंटिंग वर्क्स, रेल बाजार, कानपुर

पढ़ने योग्य पुस्तकें

ख़ूनी ग़ज़लें प्रथम भाग	-)
ख़ूनी ग़ज़लें दूसरा भाग	-)
राष्ट्रीय ग़ज़बकी ग़ज़लें	-)
राष्ट्रीय ग़ज़लें	-)
गांधीकृष्ण जन्म	-)
तरानये-फ़रहत	-)
गुलदस्तये ग़ज़ल	=
वन्देमातरम की गूंज	-
साङ्गीत मारशह्ला	।:
रणभेरी	≡
मुसाफिर भजनावली	:
महात्मा गौतम बुद्ध	
सफलताकी युक्ति	।

पता—

राष्ट्रीय सरस्वती सद[...]

चावलमन्डी, क[...]